641। ईश्वर है या नहीं यह विवाद बहुत पुराना है सच तो यह है कि एक शक्ति है जो हर व्यक्ति व प्राणी के अन्दर है जो अपना कार्य कर रही है इसी को ईश्वर कहते हैं और इस शक्ति का अंश प्रत्येक मनुष्य व प्राणी के अन्दर है जैसे जैसे मनुष्य की आस्था व प्रेम इस शक्ति पर बढता जाता है वैसे वैसे यह बीज अंकुरित हो पल्लवित होता रहता है और तभी उसकी आध्यात्मिक प्रगति होती है और वह ईश्वर को पहचानने लगता है।

642। जो व्यक्ति कर्त्तव्य विमूढ होता है वह अपने कर्त्तव्य को छोडकर अकर्त्तव्य की ओर बढता रहता है उसका हृदय दोषों का घर हो जाता है इसलिये उसको अपने कर्त्तव्य को प्राथमिकता देना अनिवार्य है नहीं तो वह पथभ्रष्ट होकर नष्ट हो जायेगा ।कर्त्तव्यहीन पुरुष कभी सफल नहीं होता ।

643। एक मनुष्य के अन्दर तीन अंश होते हैं । पहला है ईश्वरीय अंश , वह आध्यात्मिक होने के कारण इस जन्म में तथा आगे के जन्मों में भी हमेशा सुखी रहता है , दूसरा है मानवीय अंश , उसकी संसार में आसक्ति होने के कारण इस जन्म में सुखी रहता है, तीसरा है पाश्वीय अंश , वह आसुरी प्रवृत्ति होने के कारण इस जन्म में भी तथा आने वाले जन्मों में भी हमेशा दुखी रहता है ।

644। व्यक्ति की महानता उसकी धन दौलत मान व प्रतिष्ठा से नहीं आंकी जाती उसके अच्छे बुरे गुणों से आंकी जानी चाहिये , गरीब व्यक्ति प्रतिष्ठाहीन है पर सद्गुणी है तो वह महान है ।

645।कर्त्तव्य से उकताने वाला व्यक्ति कभी भी अपने लक्ष को प्राप्त करने में सफल नहीं हो पाता ।

646। महापुरुष हमेशा निस्वार्थ सेवा व दूसरों के सुख व लाभ का विचार करता है जबकि क्षुद्र पुरुष हमेशा व्यक्तिगत स्वार्थ और स्वयं के सुख व लाभ का विचार करता है।

647। आलस्य में दरिद्रता व दुख का वास होता है तथा परिश्रम में लक्ष्मी व सुख का वास होता है।

648। समय के दास मत बनो समय को दास बनाओ यह तभी हो सकता है जब हम अपने सब कार्यो को रोज निश्चित समय पर ही करेंगे तब समय अपनी प्रतीक्षा करेगा ।

649। जैसे वर्षा के पानी को धरती धीरे धीरे सब सोख लेती है वैसे ही सत्संग हरि भजन व आराधना हृदय के सब विकारों दोषों को धीरे धीरे सोख लेते हैं। हृदय गंगाजल की भांति पवित्र हो जाता है।

650। दान के महत्व का मनुष्य के प्रेम व श्रद्धा से सीधा संबंध है धनी व्यक्ति यदि अपनी प्रतिष्ठा के लिये दान देता है वह महत्वहीन है लेकिन दरिद्र व्यक्ति का प्रेम व श्रद्धा से दिया गया गुप्त दान बहुत ही महत्वपूर्ण है।

651। यशस्वी व सक्रिय जीवन का थोडा समय भी अच्छा व महत्व रखता है परन्तु निष्क्रिय व आलसी जीवन के सौ साल भी व्यर्थ होते हैं ।

652। धार्मिक स्थलों की यात्रा श्रद्धा व भक्ति के बिना व्यर्थ है शांत चित्त होकर घर में ही हृदय से श्रद्धा भक्ति से की गई आराधना तीर्थ यात्राओं से कहीं श्रेष्ठ होती है।

653। एक अगरबत्ती जितने भी समय जलती है स्वयं जल कर राख होती रहती है परन्तु उतने ही समय में पूरे वायुमंडल को गंध से सराबोर कर देती है देश के रक्षक भी लडाई में अपने जीवन की आहुति देकर देश की बगिया को सुन्दर सुखद व गंधमय बनाये रखते हैं ।

654। विनम्रता महानता प्रदान करती है तथा सत्कर्म भाग्य को बदल देते हैं दोनों ही परमार्थ प्रदान करने वाले होते हैं इनके बिना धर्म पंगु होता है ।

655। आर्थिक अभाव अभद्र पुरुषों को दुष्कर्म करने के लिये प्रेरित करता है भद्र पुरुष कभी ऐसा नहीं करता।

656। संयमी व्यक्ति जीवन की हर समस्या को कारगर ढंग से हल करने की क्षमता रखता है असंयमी जीवन की छोटी से छोटी समस्याओं को जटिल बनाकर अकर्मण्यता का शिकार होता है संयम ही श्रेष्ठ है ।

657। अभिमान व अहंकारयुक्त बडप्पन विनाश की ओर ले जाता है अहंकार अभिमान रहित होना मानवता है।

658। एक छोटी सी बेल जिस तरह थोडे ही समय में बढकर छा जाती है उसी प्रकार एक सत्कर्म दूसरे सत्कर्मो को जन्म देकर तथा एक दुष्कर्म दूसरे दुष्कर्मो को जन्म देकर जीवन में छा जाते हैं । सत्कर्मो से मनुष्य महान होता है दुष्कर्मो से मनुष्य दानव होता है ।

659। परिस्थितियों को बदलना कठिन है उनसे समझौता करना ही एक मात्र मार्ग होता है यदि इस धारणा को हम अपने मन में उतार लें तो मन संतुष्ट होने के कारण जीवन में मन की व्याकुलता चंचलता व तनाव आदि सब दूर हो जाते हैं परम शांति मिल सकती है ।

660। प्राकृतिक रूप से मनुष्य हमेशा विजय चाहता है स्त्री आत्मसमर्पण चाहती है मनुष्य सब कुछ प्राप्त करना चाहता है , स्त्री देना चाहती है ।

661। हृदय का काम सत्संग भजन कीर्त्तन द्वारा अपने को पवित्र करना है इसके बाद आत्मा का कार्य ईश्वर का साक्षात्कार करना होता है ।

662। नालियों का गंदा पानी गंगाजल में मिलते ही पवित्र हो जाता है दुराचारी भी सत्संग भजन करके सदाचारी से मिलके ईश्वर को प्राप्त कर सकता है ।

663। पीलवान अपने अंकुश से शक्तिशाली हाथी पर नियंत्रण पाता है मनुष्य भी सच्चे हृदय से प्रभु की आराधना व अभ्यासरूपी अंकुश द्वारा हाथीरूपी शक्तिशाली मन पर नियंत्रण पा सकता है ।

664। आलस्य अकर्मण्यता को परिश्रम कर्त्तव्यपरायणता को जन्म देता है।

665। अकाल मृत्यु का अर्थ है निश्चित समय से पहले ही दुर्घटना वश मृत्यु का हो जाना , इसकी आत्मा समय पूरा होते तक भटकती रहती है उसके बाद ईश्वर उसे कर्मानुसार जन्म या मोक्ष देते हैं ।

666। यह सुन्दर नीला आकाश चांद सितारे सूर्य नक्षत्र सफेद सुन्दर बर्फीली पहाडियां झरने नदियां सुन्दर पेड पौधे फूल मनुष्य सब जानवर तथा समुद्र में सुन्दर सुन्दर मछलियां व सुन्दर सुन्दर दृश्य व संपूर्ण ब्रह्मांड और जो कुछ भी हम देख रहे हैं वह सब उसी परम ब्रह्म परमात्मा का ही ऐश्वर्य है सब उसी के इशारे पर चल रहा है तथा सब में वही सर्वशक्तिमान विद्यमान है उसके अलावा विश्व में कुछ है ही नहीं उसी की सब लीला है ।

667। गृहस्थ जीवन में अशांति व टकराव के मुख्यत: दो कारण होते हैं एक तो एक दूसरे की भावनाओं को ठीक से न समझ पाना दूसरे सही समय पर चुप रहने का संयम न बरत पाना , यदि हम दोनों चीजों का सही ध्यान रखें तो गृहस्थ जीवन सुख शांतिमय हो जायेगा ।

668। किसी से होड भी करनी हो तो अच्छे गुणों की करनी चाहिये , दिव्यता पा जाओगे ।

669। मस्तिष्क में वैराग्य की कल्पना का आना ही शुभ संकेत है सारे विकार दूर हो जाते हैं हृदय शुद्ध हो जाता है सद्गुणों का समावेश हो जाता है संसार की आसक्ति समाप्त हो जाती है मनुष्य ईश्वरोन्मुख हो जाता है मोह माया से छूट जाता है ।

670। कामनाओं के लिये उदारता को मत त्यागो , ममता के लिये आदर और प्यार को मत त्यागो , अधिकार के लिये कर्त्तव्य को मत त्यागो , आपके हृदय में सच्ची भक्ति व संयम जाग्रत हो जायेगा ।

671। संसार में सुखों व दुखों का अपार समुद्र भरा पडा है जो धीर मनुष्य दुखों को प्रभु का प्रसाद मान ले और सुखों को पाकर अभिमानित न हो वह महापुरुष हमेशा सुखी रहता है ।

672। अहंकार मनुष्य को झुकने नहीं देता विश्व उसे झुकाता है जो स्वयं झुकता है वह विनम्र है उसे विश्व उठाता है ।

673।आजकल घर में वृद्ध व्यक्ति जिसने खून पसीने से परिवार को पाला है उसका सम्मान नहीं के बराबर है , ईश्वर सब देखते हैं आगे चलकर उनके बच्चे ही उनके साथ ऐसा व्यवहार करेंगे । ऐसा प्रकृति का नियम है हम जैसा बोयेंगे वैसा ही काटेंगे ।

674। प्रभु ने हमें स्वच्छ आत्मा दी है हमें उनको वैसी ही स्वच्छ वापिस भी करनी है उसको दूषित करना पाप है। परब्रह्म परमात्मा की उपासना व आराधना से उसकी पवित्रता बनाये रखना हमारा धर्म है ।

675। एक ही वस्तु के लिये स्वभावानुसार व्यक्तियों के भिन्न भिन्न दृष्टिकोण होते हैं कोई अच्छी वस्तु में भी बुराई देखता है कोई बुरी वस्तु में भी अच्छाई देखता है , अच्छाई बुराई को समान समझने में ही सुख है ।

676। सद्‌गुण और दुर्गुण प्रत्येक व्यक्ति में विद्यमान रहते हैं तथा वे चुम्बक की तरह काम करते हैं जैसे भी वातावरण में वह रहता है वैसे ही गुण वह धारण करता है उन्हीं से उसके जीवन की आधारशिला बनती है उसी से उसका भविष्य भी बनता है ।

677। उच्च आध्यात्मिक मूल्यों व उच्च आदर्शों की अनुभूति स्वयं के जीवन के अस्तित्व से भी बहुत बढकर होती है यदि हम इन्हें पाने में सफल हो जायें तो उनसे अपना जीवन कृतार्थ कर ईश्वरीय आनन्द को पा सकते हैं।

678। प्रभु में विश्वास की किरण का उदय होना ही ज्ञान के प्रथम चरण की शुरुआत होती है उसी से मुक्ति मिलती है ।

679। संसार को मिथ्या मानकर वैराग्य की भावनाओं से भगवान का भजन व उपासना करने वाले व भगवान का ऐश्वर्य समझकर संसार के सभी प्राणियों में व वस्तुओं में उसी का वास समझ भजन उपासना करने वाले दोनों ही श्रेष्ठ हैं क्योंकि दोनों के हृदय में श्रद्धा भगवान की ही रहती है ।

680। सपनों के संसार व वास्तविक संसार में कोई भी अन्तर नहीं होता , सपनों का संसार कुछ ही मिन्टों का होता है वास्तविक संसार कुछ वर्षों तक चलता है उसके बाद समाप्त हो जाता है जिसने इस रहस्य को जान लिया वह सांसारिक बंधनों से अलग रहकर आत्मोन्नति की ओर अग्रसर रहता है और संसार से मुक्त हो जाता है

681। संतोषी व्यक्ति यदि सत्य का पालन करता है तो आत्मज्ञान प्राप्तकर सब बंधनों से मुक्त हो मोक्ष पाता है।

682। भौतिकवाद सम्पूर्ण जीवन को दूषित कर नरक गामी बनाता है अध्यात्मवाद उसे स्वच्छ कर निर्वाण का अधिकारी बनाता है ।

683। गाडी बंगला फार्म हाउस धन दौलत तथा सम्पन्नता आदि सब भौतिक सम्पत्ति होने के बाद भी हम भिखारी के भिखारी ही हैं क्योंकि हमारा शरीर व सब सम्पत्ति मरने के बाद यहीं रह जाने वाली है यदि हम आध्यात्मिक संपत्ति एकत्र करें तो वह इस जन्म में तथा मरने के बाद भी हमारे साथ जाकर कल्याणकारी होगी।

684। जीवन के अंत समय में यमराज द्वारा दिया गया उपहार "काल" ही तो है जिसकी कल्पनामात्र से मायामय संसारी व्यक्ति का हृदय कांपने लगता है और दुखों के सागर में डूब जाता है परन्तु ज्ञानी पुरुष जानता है कि यह शरीर तो नाशवान है और आत्मा अमर है वह तनिक भी विचलित नहीं होता और काल को सहर्ष गले लगाता है स्वागत करता है ताकि पापी संसार से छुटकारा मिले ।

685। सम्पूर्ण विश्व व ब्रह्माण्ड ज्ञान का अपार भंडार है मनुष्य का ज्ञान उसके सामने पहाड के सामने राई जैसा है फिर भी मनुष्य ने अब तक जो ज्ञान के साधन जुटाये हैं उन्हें वह अपनी बहुत बडी उपलब्धि मानता है जबकि वह अपने शरीर के बारे में ही पूर्ण जानकारी नहीं रखता है अनभिज्ञ व असहाय है उसका ज्ञान अधूरा है ।

686। भौतिक ज्ञान व आध्यात्मिक ज्ञान दोनों एक दूसरे के विपरीत होते हैं भौतिक सांसारिक सुख सुविधाओं से संबंधित होता है संसार में बांधने वाला , कष्टदायक व नाशवान होता है आध्यात्मिक चिर नैसर्गिक सुख से संबंधित मोह माया से परे सुखकारी परम शांति व परमानन्द को प्राप्त करने वाला होता है जिससे मुक्ति मिलती है

687। संसार की सुखसुविधा के सब साधन खिलौना मात्र हैं उसे इस माया जाल से निकलने के लिये आध्यात्मिक साधनों , सत्संग भजन आदि का सहारा लेना होगा तभी वह प्रभु की प्राप्ति कर संसार से तर सकता है।

688। जब तक प्राण शरीर में रहते हैं तब तक सगे संबंधी व प्रिय जन सब अपना कहते हैं प्राण निकलते ही उसे चिता पर रखकर जला देते हैं अपने साथ तो धर्म व अच्छे कर्म ही जाते हैं ।

689। आत्मा को भवसागर से पार करने के लिये ज्ञान रूपी नौका की आवश्यकता होती है यदि ज्ञानरूपी नौका नहीं होगी तो आत्मा का उद्धार होना संभव नहीं होगा ।

690। निष्कपट निष्छल व निस्वार्थ परोपकार ईश्वर की पूजा ही है तथा कपट छलयुक्त स्वार्थ के लिये किया गया उपकार दानव पूजा है ।

691। बाहुबल द्वारा हथियाई गई सत्ता का न तो जनता ही हृदय से स्वागत करती है नाहीं इतिहास इसे महत्व देता है शासक स्वार्थ के लिये ही करता है जनता की भलाई व सेवा के लिये नहीं , ऐसा शासक देशद्रोही ही है।

692। सब मनुष्य व प्राणियों में सब जगह व सब वस्तुओं में वही परब्रह्म परमात्मा समाया हुआ है इस बात को कहते सब हैं परन्तु इस रहस्य को जानता कोई नहीं है जिसने इस को जान लिया वह इस पापी संसार से तर जायेगा , और न जानने वाले चौरासी लाख योनियों में अनादि काल तक भटकते रहेंगे ।

693। घर पैसा मकान सब वस्तुएं व सगे संबंधी आदि सब मनुष्य के साधन हैं जब तक जीवन है तब तक हैं फिर समाप्त हो जायेंगे पर मानव शरीर ईश्वर द्वारा दिया गया वह साधन है जिससे मनुष्य सत्संग प्रभु की आराधना अच्छे कर्म करके हृदय की पवित्रता द्वारा ईश्वर का साक्षात्कार कर हमेशा के लिये तर जायेगा ।

694। वर्तमान काल में फिल्मों में व टी वी पर जो भी कार्यक्रम आते हैं सब अश्लीलता व नंगापन लिये हुए होते हैं कोई भी सुसंस्कृत व्यक्ति अपने बच्चों के साथ देखना पसंद नहीं करते और जो करते हैं उनकी गिरी हुई संकीर्ण विचार धारा न स्वयं के बच्चों का न देश का भविष्य देखती है प्रभु उन्हें सद्बुद्धि दें।

695। यदि भव्य व महान पुरुष बनना है तो अपने मूल को पहचानो असीम सामर्थ्य को पहचानो अपने अन्दर की छिपी हुई दिव्य शक्तियों को पहचानो जो मानव को भगवान की श्रेणी में लाकर खडा कर देती है ।

696। जिनके विचारों और भावनाओं में दया सत्यता शुद्धता भक्ति भावना आदि सद्गुण होते हैं वे कवि लेखक भक्त विद्वान व आध्यात्मिक क्षेत्र में बहुत आगे निकल जाते हैं उन पर सरस्वती व लक्ष्मी जी की कृपा होती है।

697। सब कामनाओं का त्याग ही परम शांति का उपाय व कठिन तपस्या है अशांति से क्रोध का आना स्वाभाविक है ।

698। भगवान श्री कृष्ण की वाणी के रूप में गीता सब उपनिषदों का सार तथा मानवता के कल्याण के लिये एकमेव साधन है व पथ प्रदर्शक है ।

699। सच बोलना पुण्य है झूठ बोलना पाप है परन्तु किसी की जान बचाने के लिये सच के स्थान पर यदि झूठ बोला जाये या झूठ के स्थान पर सच बोला जाये तो वह भी पुण्य ही माना जायेगा ।

700। मनुष्य की परिस्थितियां ही मनुष्य को अच्छे बुरे कर्म करने को बाध्य करती हैं जो प्रभु को ही अपना सहारा समझ कर सब उसी पर छोड देता है प्रभु भी उस की रक्षा करने को तत्पर रहते हैं ।

701।आसक्ति व वैराग्य दोनों एक दूसरे के विपरीत हैं आसक्ति मनुष्य के अच्छे गुणों को नाश करती है संसार में लिप्त करती है वैराग्य से सद्‌गुणों का समावेश होता है दिव्य भावनायें जागृत होती है निर्वाण व मुक्ति होती है ।

702। अपने अन्दर मन द्वारा इन्द्रियों का संगठन और बाहर देश में लोक संगठन दोनों ही महत्वपूर्ण होते हैं । पहले से आध्यात्मिक उन्नति होती है दूसरे से देश शक्तिशाली व दृढ बनकर उन्नति के शिखर पर पहुंचता है।

703। जो व्यक्ति अकर्मण्य व नैतिक मूल्यों से रहित है वह कभी अच्छा नागरिक व देशभक्त नहीं हो सकता कर्त्तव्यनिष्ठ व्यक्ति ही नैतिक मूल्यों को अपनाकर श्रेष्ठ नागरिक व देशभक्त हो सकता है ।

704। रे मन अपनी इस काया को सजाने संवारने में इतना समय नष्ट न करो यह काया तो बुढापे में जर जर होकर समाप्त हो जायेगी कुछ उपयोग नहीं होगा । इस अमूल्य समय को सत्संग हरि भजन में लगाकर तथा हृदय से प्रभु की उपासना रूपी अमृत पान कर अमर हो जाओ फिर चौरासी लाख योनियों में न जाना पडेगा ।

705। मानव हर क्षेत्र में तथा सब बातों में पूरी तरह प्रकृति का दास है उसकी सहायता के बिना एक पल भी नहीं चल सकता फिर भी अपने को ही कर्त्ता समझता है कितना थोता अहंकार है ।

706। आजकल विश्व में जो राजनीतिक घटनाक्रम चल रहा है वह अशोभनीय निंदनीय व दुखदायी है जिसको जहां अवसर मिल रहा है सत्ता हथियाकर बदला ले रहा है. भ्रष्टाचार आतंकवाद व स्वार्थपरायणता का राज्य है। यह सब नैतिक आध्यात्मिक व धार्मिक भावनाओं के अभाव में हो रहा है।जब तक विश्व में हर मानव अपने व्यक्तिगत जीवन में नैतिक धार्मिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों को नहीं अपनायेगा तब तक संसार में ऐसा ही चलता रहेगा ।

707। मायामय मानव सांसारिक सुख साधनों को प्राप्त करने में ही सच्चा सुख और शांति को खोजता है परन्तु फिर भी उसके हाथ दुख ही आते हैं सच्चा सुख तो वासनाओं के त्याग में हृदय से ईश्वर को याद करने व परम ब्रह्म परमात्मा की भक्ति में ही है।

708। आत्मा और शरीर दोनों अलग अलग हैं शरीर में जो बुद्धि है उसका ही मुख्य कार्य रहता है सात्विक बुद्धि आत्म शुद्धि के बाद मनुष्य को मुक्ति दिलाती है और राजसी व तामसी बुद्धि मनुष्य को नरक का भागी बनाती है । यह सम्पूर्ण शरीर तो बुद्धि का ही दास है ।

709। किसी की भी आर्थिक सहायता करना निस्वार्थ सेवा करना पुण्य का काम है परन्तु उसके बारे में मन में अभिमान आ जाना पुण्य को पाप में बदल देता है । मन को कुटिल बना देता है ।

710। निर्धनता व दुखदायी जीवन से मनुष्य हमेशा दुर्बल व मुरझाया हुआ रहता है लेकिन इसके दूर होते ही वह खुशहाली में आ जाता है अब वह ग्रीष्म ऋतु में सूखे पेड पाधों की तरह नहीं परन्तु वर्षा ऋतु के हरियाली युक्त पेड पौधों की तरह स्वस्थ दीख पडता है यह सब उसी परमात्मा का प्रताप व विडंबना है।

711। धार्मिक संस्थायें व वो पुरुष जो सामूहिक रूप से देश के नन्हें मुन्ने बच्चों के हृदय में नैतिकता धार्मिक व देश भक्ति की भावनाओं को जाग्रत व प्रज्वलित करते हैं वे देश के भाग्य निर्माता ही हैं ऐसे पुरुषों का देश बाहरी शक्तियों के सामने कभी नत मस्तक नहीं होता अपितु अपने देश का विश्व में गौरव व सम्मान बढाते हैं।

712। अपने जीवन यापन व जीविका निर्वाह के लिये थोडे ही धन की आवश्यकता होती है क्षुधापूर्ति के लिये आटे की ही रोटी चाहिये , सोने चांदी व जवाहरात का उपयोग नहीं कर सकते , न ही हम अपनी चल अचल संपत्ति मरने के बाद साथ ले जा सकते हैं फिर भी मनुष्य सीमा से बाहर बहुत धन कमाने के लिये झूठ छल कपट प्रपंच और पापों का सहारा लेकर क्यों नरक गामी है ?

713। संपूर्ण परम आनन्द व शांति का स्त्रोत तो अपने अन्दर ही विद्यमान है कहीं अन्यत्र ढूंढना मूर्खता पूर्ण है ज्ञानी पुरुष यह अच्छी प्रकार जानते हैं उसका लाभ उठाते हैं परन्तु विक्षिप्त पुरुष मृगतृष्णा के कारण परम आनन्द व शांति को सांसारिक सुखों में ही समझकर जीवनपर्यन्त भटकते रहते हैं ।

714। यदि हम पापी भवसागर को पार करने के लिये आध्यात्मवाद रूपी नौका का उपयोग करेंगे तो सब पापों से मुक्ति पाकर तर जायेंगे , भौतिकवाद रूपी नौका तो पापी भवसागर के भंवरजाल में फंसाकर हमें डुबा देगी ।

715। दूसरों को आध्यात्मिक ज्ञान देना और विवेक जाग्रत करना सर्वोत्तम दान है सब दानों में श्रेष्ठ है।

716। अतिशय भोलेपन में भी ईश्वर का वास होता है क्योंकि उसमें निष्छलता निष्कपटता व पवित्रता होती है तथा सब विकारों से परे होता है ।

717। एक अच्छे चरित्र में सब सद्‌गुणों का वास होता है दुर्गुणों का नाश होता है।

718। प्रभु को पाने के लिये भक्ति में ''सरलता'' का अपना बहुत महत्वपूर्ण स्थान है पवित्रता निष्कपटता से प्रभु को पाने का मार्ग खुल जाता है सरलता प्रभु को भी प्यारी है भक्त को अपना लेते हैं ।

719। जो व्यक्ति निर्धन व संतोषी होता है उसको ईश्वर ने धैर्य व संयम भी दिया होता है उसके हृदय में शांति व पवित्रता , धनी व अहंकारी व्यक्ति की अपेक्षा अधिक होती है वह समाज के लिये भी कभी कष्टदायी नहीं होता जबकि धनी व अहंकारी समाज के लिये कष्टदायी ही होता है ।

720। जनता में राष्ट्रीय प्रेम अनुशासन कर्त्तव्य व नैतिकता की भावना पैदा करके ही हम समस्त राष्ट्र का विकास कर सकते हैं तथा उन्नति के शिखर पर ले जा सकते हैं पाश्चात्य संस्कृति को अपनाकर हम कभी भी अपने देश की उन्नति नहीं कर सकते ।

721। मनुष्य व सब प्राणियों को ईश्वर उनके कर्मो के अनुसार ही शरीरों को धारण कराता है और उनके कर्मो के अनुसार ही उनसे छुटकारा दिलाता है । पुण्य कर्म करता है तो परम गति को पाता है वरना चौरासी लाख योनियों में भटकता रहता है।

722। जब व्यक्ति ईश्वर के ध्यान में अपना आपा खो बैठता है वह समाधि की पहली सीढी है यदि यह प्रक्रिया बार बार होने के बाद स्थाई अवस्था में बदल जाये वह देह त्याग कर ब्रह्म में लीन हो जाता है जिसे चिर समाधि कहते हैं और यह नश्वर शरीर यहीं रह जाता है ।

723। हे प्रभु संसार के सब दुर्गुणों विकारों व्यसनों तथा सब बुरी बातों को दूर करो तथा सब सद्गुणों सद्विचारों सद्भावनाओं व सब अच्छी बातों का साम्राज्य स्थापित करो जिससे संसार के सब प्राणी अच्छे बनकर सुख शांति से रह सकें ऐसी आपसे करबद्ध प्रार्थना है ।

724। शरीर की शुद्धि की अपेक्षा आत्मिक शुद्धि की बहुत आवश्यकता है इहलोक परलोक दोनों में कल्याणकारी है। शरीर तो नश्वर है इस लोक में ही नष्ट हो जायेगा ।

725। यदि कोई ऐसा सद्गुरू मिल जाये जो अपने सूक्ष्म शरीर के अन्दर की छिपी हुई शक्तियों का ज्ञान करा दे तो कोध ममता में अज्ञान ज्ञान में दुख सुख में तथा अशांति शांति में बदल जायेगी सम्पूर्ण जन्मों का उद्धार हो जायेगा परम कल्याण होगा ।

726। शब्दों के पीछे मनोवैज्ञानिक रहस्य छिपा हुआ है हम जिस शब्द का प्रयोग करते हैं उसकी आभा व आकृति हमारी भावनाओं द्वारा हमारे मस्तिष्क में उभर आयेगी । जैसे हाथी कहा तो हाथी का डीलडौल व आकृति भावनाओं द्वारा हमारे मस्तिष्क में तुरन्त उभर आयेगी इसी प्रकार हमारे वैदिक मंत्रों में भी यही बात है मंत्रों द्वारा ही हमारे शरीर की चिकित्सा तथा आध्यात्मिक मार्ग प्रदर्शन होकर कल्याण हो सकता है यह सब शब्दों का ही प्रभाव व प्रताप है ।

727। संसारी मानव संसार के भौतिक सुख साधनों से अपने को संपत्तिवान मानता है सब यहीं रह जाने वाला है कुछ भी मरने के बाद उसके साथ नहीं जायेगा ।

728। परमात्मा ने अपने शरीर में क्षमता विद्वता और अच्छाईयों का गुप्त अपार भंडार दिया है जो सूक्ष्म शरीर में निहित है जो अपने आध्यात्मिक पराक्रम से व सद्‌गुरु की कृपा से पहचान लेता है वह तर जाता है और जो नहीं पहचान पाता है वह डूब जाता है व पथभ्रष्ट हो जाता है ।

729। क्षमावान व्यक्ति के चित्त में हमेशा दया का वास होता है वह सुख और शांति से रहता है बदले की भावना वाले हमेशा ही क्रोध अहंकार प्रतिशोध की ज्वाला में जलते रहते हैं

730। भाग्य के ऊपर निर्भर रहने वाला व्यक्ति अकर्मण्य व आलसी होता है तथा जीवन पर्यन्त कभी अपने किसी कार्य में सफल नहीं हो पाता है सदैव दुखी रहता है जबकि कर्त्तव्यनिष्ठ व्यक्ति भाग्य पर निर्भर न रहकर अपने भाग्य का निर्माण स्वयं करता है सदैव सुखी व सफल होता है ।

731। विवेकहीन पुरुष धर्माचरण नहीं कर सकता है ऐसा पुरुष पशु के समान ही होता है सद्‌पुरुष के लिये धर्मा चरण और विवेक दोनों ही आवश्यक हैं मुक्ति के मार्ग हैं ।

732। जो विवेकरूपी बाण से समस्त कामनाओं वासनाओं को बेध सकता है आध्यात्मिक क्षेत्र में वही विजयी सफल योद्धा होता है ।

733। जैसे एक पहिये की गाडी अपने गन्तव्य स्थान पर नहीं पहुंच सकती उसी प्रकार ईश्वर को प्राप्त करने के लिये विवेक और वैराग्य दो पहिये हैं। दोनों का होना नितांत आवश्यक है ।

734। "मैं" और "मेरा" दोनों ही अहंकार की प्रतिमूर्ति हैं दोनों ही नरक के द्वार हैं "तू" और "तेरा" दोनों ही विनम्रता की मूर्ति हैं दोनों ही उद्धार के मार्ग हैं।

735। शक्तिशाली मन की स्थिति बडी विचित्र होती है समाज में अभद्र व बुरी संगति वाले पुरुष उसे अधोगति की ओर ले जाते हैं लेकिन भद्र पुरुष व सत्संगी मुक्ति की ओर ले जाते हैं ।

736। स्वार्थवश फल की प्राप्ति के लिये जो व्यक्ति पुन्य दान व तप आदि अच्छे कर्म करता है स्वर्ग में सुखों को भोगकर फिर संसार में आते हैं । निस्वार्थ भाव से सांसारिक सुखों की कामना न करते हुये पुन्य दान व तप आदि अच्छे कर्म करनेवाले सांसारिक सब बंधनों से मुक्त होकर हमेशा के लिये प्रभु में ही लीन हो जाते हैं तथा उनका पुर्नजन्म नहीं होता ।

737। मनुष्य की इच्छायें अनन्त होती हैं और इच्छाओं का दास होने के कारण उनकी पूर्ति के लिये नाना प्रकार के अपराध करने को उद्यत रहता है उसका हृदय अशांति भय व दुख का घर हो जाता है । जो व्यक्ति इच्छाओं को मन से त्याग देता है वह हमेशा सुख निर्भय व शांतिपूर्ण जीवन व्यतीत करता है ।

738। मांसाहारी भोजन से व्यक्ति की प्रवृत्ति क्रूर व अपराधी होती है हिंसात्मक कार्य करने को उद्यत रहता है । शाकाहारी व्यक्ति की प्रवृत्ति दयावान व सहनशील होती है जीवन में अहिंसा को अपनाता है। यह विश्व प्रसिद्ध तथ्य है इसके अतिरिक्त वाघ्र व हिरन भी प्रकृति के दो अनमोल उदाहरण हैं ।

739। दूसरों की भलाई के लिये निस्वार्थ भाव से किया गया कार्य सर्वश्रेष्ठ व परमात्मा को ही समर्पित होता है।

740। किसी भी कार्य को बाधाओं के कारण न करना कायरता व अकर्मण्यता है वह कभी सफल नहीं होता है।

741। काम व कामवासनायें एक दिशाहीन अकर्मण्य व अज्ञानी पुरुष पर ही हावी होते हैं जिनके कारण वह दुखी जीवन व्यतीत करता है परन्तु जो पुरुष सैद्धान्तिक कर्मठ व ज्ञानी होता है वह उन्हें अपना शत्रु समझ कर उनका त्याग करता है जीवन पर्यन्त सुखी रहता है।

742। आग के पास जाने से ताप का आभास होता है तथा बर्फ के पाास जाने से ठंडक का आभास होता है ऐसे ही कुसंगत व अपराधी व्यक्तियों के पास जाने से अशांति और सत्संग करने से व महापुरुषों के पास जाने से शांति का अनुभव होता है।

743। जो महापुरुष दूसरों को परम शांति व सुखी जीवन का मार्ग बताते हैं वो महापुरुष भी परब्रह्म परमात्मा से ही ये सब प्राप्त करते हैं ।

744। पवित्र तीर्थों में गंगाजल से स्नान करने से पापों का नाश होता है , तार्थरूपी मंदिरों में गंगाजल रूपी सत्संग व प्रवचन सुनने से बुरे विचारों व पापों का नाश होता है ।

745। दूसरों के दुर्गुणों को दूर करने वाला ,परमार्थ का मार्ग दिखाने वाला ,असहाय की सेवा करने वाला ईश्वर का परमप्रिय है उसकी मुक्ति व कल्याण के रक्षक भगवान होते है ।

746। मन से सत्संग कीर्त्तन करने वाले के हृदय से सब विकार दूर हो जाते हैं पवित्रता आ जाती है प्रभु से मिलन की संभावना निश्चित हो जाती है ।

747। धर्म एक सांस्कृतिक तथा दैविक साधन है जिसे निरंतर अपनाने से धीरे धीरे हृदय की शुद्धि के बाद आत्मज्ञान प्राप्त होता है परम शांति मिलती है व परमार्थ को प्राप्त कराता है ।

748। अधर्म एक असांस्कृतिक व दानवीय साधन है जिसे निरंतर अपनाने से धीरे धीरे हृदय दुर्गुणों व विकारों का घर बनकर अशांति व पापों को जन्म देकर नरक व अधोगति प्राप्त कराता है ।

749। पहले अपने को सुधारो तब ही संसार को सुधारने का अधिकार प्राप्त होगा । हम अपने मन व हृदय को सत्य व अच्छे कर्मो द्वारा शुद्ध करेंगे तभी पवित्रता आयेगी । तब यदि हम दूसरों को सुधारने का प्रयत्न करेंगे तब वास्तव में सुधार आयेगा , बिना पवित्रता के दूसरों पर कोई कारगर प्रभाव नहीं पडेगा , प्रयत्न निरर्थक ही सिद्ध होगा।

750। हे प्रभु ये मन जब भी सांसारिक आपदाओं से व उलझनों में फंसकर दुखी होवे परमार्थ मार्ग से भटक जावे आपको भूलकर अशांत हो पापों की ओर बढे तब आप अपनी कृपा तथा आशीर्वाद से इस अशांत मन में शांति का संचार करें तथा दुनियां के पापों से दूर रहने की शक्ति प्रदान करें ताकि ये मन कभी आपको भूल न पाये।

751। अपनी समस्त चल अचल संपत्ति तथा धन दौलत का दान करने से भी इतना पुण्य नहीं मिलता जितना निरंतर प्रभु का हृदय से सुमिरन ध्यान आराधना से प्राप्त होता है ।

752। संपूर्ण मानव शरीर में आत्मा ही है जो ईश्वर द्वारा प्रदत्त सभी अच्छे व पवित्र तत्वों से परिपूर्ण है तथा जो मानव को अच्छे व सत्कर्म करने की प्रेरणा देकर उसका कल्याण करती है ।

753। यदि ईश्वर की कृपा तथा आशीर्वाद का प्रात्र बनकर उन्हें पाना है तो सब दुर्गुणों को मन से त्यागना होगा सद्गुणों को ग्रहण करना होगा यही उसका मूलमंत्र है ।

754। जब मनुष्य ''काम'' का दास हो जाता है तो अहंकार क्रोध मोहमाया आदि दुर्गुण उसे घेर लेते हैं वह अपनी स्थिति से गिर जाता है नरक का भागी होता है। यदि वह उसपर विजय पा ले तो सांसारिक बंधनों से मुक्ति पाकर मोक्ष प्राप्त कर सकता है ।

755। ''काम'' की स्थापना ईश्वर ने सृष्टि के प्रवाह को निरंतर बनाये रखने के लिये ही की थी इसलिये प्रत्येक प्राणी व मनुष्य में ''काम'' की अहं भूमिका है यदि यह निष्क्रिय हो जाये तो सृष्टि का प्रवाह ही रुक जायेगा ।

756। रसों में सबसे बडा रस धर्म है दानों में सबसे बडा दान धर्म है तथा जीवन में सबसे अच्छा धार्मिक जीवन है जो संपूर्ण जीवन को सुधार कर इस पापी संसार से हमेशा के लिये मुक्ति दिलाता है ।

757। जब कभी एक व्यक्ति अपने अपराधों व दुर्गुणों के लिये प्रभु के सामने फूटफूटकर रोता है पश्चाताप करता है उसके सभी अपराध आंसुओं से धुलकर हृदय निर्मल तथा गंगाजल की तरह पवित्र हो जाता है प्रभु की क्षमा व कृपा का अधिकारी हो जाता है ।

758। भगवान पवित्र निष्कपट व सरल हृदय में ही वास करते हैं भगवान को पाने के लिये तथा अपने जीवनोद्धार के लिये सत्संग अनुराग भक्ति व आराधना द्वारा जीवन सफल करना चाहिये ।

759। जो परिश्रम कष्ट दान व तप स्वार्थ की दृष्टि से सगे संबंधी व इष्ट मित्रों के लिये किया जाता है वह मोहमाया मय होने के कारण निष्फल होता है परन्तु दूसरों की भलाई के लिये परमार्थ की दृष्टि से किया गया कार्य सदा सर्वोत्तम होता है मुक्ति दिलाता है ।

760। ज्ञानी व भद्र व्यक्ति अपने पौरुष ज्ञान व शक्ति का उपयोग हमेशा दूसरों की भलाई सेवा व अच्छे कर्मों में करते हैं ताकि समाज व उनका अपना उद्धार हो सके । अज्ञानी व अभद्र पुरुष उनका उपयोग दूसरों का अनिष्ट करने व अपने स्वार्थ को पूरा करने के लिये दुष्कर्मों में करते हैं जो अपने व दूसरों के लिये अनिष्टकारी होते हैं।

761। धर्म और जातिभेद को अज्ञानी पुरुष ही मानते हैं ज्ञानी पुरुष जातिभेद को बिल्कुल नहीं मानते वे जानते हैं यह तो मनुष्य का बनाया है ईश्वर ने तो एक ही जाति व थर्म बनाया है वह है मानवता का ।

762। ईश्वर की कृपा व आशीर्वाद तो सब पर बराबर ही होता है ज्ञानी पुरुष अपने ज्ञान चक्षुओं द्वारा इसे जान लेते हैं उसकी कृपा का लाभ उठाकर तर जाते हैं अज्ञानी पुरुष उसपर ध्यान न देकर संसार में ही रमे रहते हैं तो उनका उद्धार कैसे होगा ।

763। आत्मा न पैदा होती है न मरती है वह थी है व रहेगी । फिर तुम्हें कौन मार सकता है क्यों व्यर्थ डरते हो व्यर्थ की चिन्तायें छोड दो आत्मा अमर है ।

764। अकेले शून्य का कोई मूल्य नहीं होता किसी अंक के साथ जोड दिया जाये तो बहुत मूल्य हो जाता है अकेले व्यक्ति का कोई मूल्य नहीं होता यदि वह प्रभु की भक्ति को धारण कर लेता है उसका मूल्य भी बहुत हो जाता है ।

765। एक अहंकारी मदयुक्त व्यक्ति यदि अपनी सत्ता को ही सर्वत्र देखता है तो उसकी अवस्था एक बैलगाडी के नीचे चलने वाले कुत्ते की तरह ही है जो यह सोचता है कि बैलगाडी मेरे ही बल पर चल रही है वरना न चल पायेगी ।

766। जो हुआ वह अच्छा ही हुआ जो हो रहा है वह अच्छा ही हो रहा है जो होगा वह भी अच्छा ही होगा । तुम भूत का पश्चाताप मत करो भविष्य की चिन्ता भी मत करो वर्तमान तो चल ही रहा है सब उसी पर छोड दो।

767। सदियों तक सब जन्मों में भटकते रहने व सब प्रकार के दुखों को भोगने से तो बुद्धिमानी इसी में है मानव शरीर के मिलते ही ज्ञान का लाभ उठाये परमब्रह्म परमात्मा के सत्संग कीर्त्तन भजन व आराधना में समय बिताकर उसको पाये अपने जीवन को सफल बनाये जन्म मरण के बंधनों से छूट जाये ।

768। मनुष्य की कितनी बडी अज्ञानता है हृदय के अन्दर ही ईश्वर का वास होते हुये भी उसे सब तीर्थों में ढूंढता रहता है जब उसका विवेक जाग्रत हो जायेगा वह स्वयं ही ईश्वर का स्वरूप हो जायेगा ।

769। तुम क्या लाये थे जो तुमने खो दिया तुम्हारा क्या गया है जो तुम रोते हो तुमने क्या पैदा किया है जो नाश हो गया है जो लिया है यहीं ईश्वर से लिया है सब यहीं छोड जाना है खाली हाथ आये थे खाली हाथ जाना है।जो आज तुम्हारा है कल किसी और का था परसों किसी और का होगा तुम इसे पाकर अपना समझकर आसक्त हो रहे हो बस यही आसक्ति तुम्हारे सब दुखों का कारण है ।

770। हृदय से ईश्वर के प्रति संपूर्ण समर्पण की भावना ही सब यज्ञ दान तप तथा आराधना आदि का फल है इसी भावना को पाने के लिये ही व्यक्ति सब धर्मार्थ करता है व मुक्ति पाता है ।

771। शांति का एकमेव मार्ग क्षमा ही है क्षमा तथा सहनशीलता से शत्रु भी परास्त होकर अपने परम मित्र हो जाते हैं क्योंकि यह दोनों ही तप त्याग और हृदय की पवित्रता पर आधारित हैं ।

772। परिवर्तन सृष्टि का नियम है जिसे हम मृत्यु समझते हैं वही जीवन है एक क्षण में तुम करोड पति बन जाते हो दूसरे क्षण में ही दरिद्र हो जाते हो तेरा मेरा छोटा बडा अपना पराया सब हृदय से मिटा दो फिर सब तुम्हारे हैं और तुम सबके हो ऐसा शुभ विचार अपने मन में धारण कर लो ।

773। न यह शरीर तुम्हारा है न तुम शरीर के हो यह तो अग्नि जल वायु पृथ्वी आकाश से बना है और सब उसी में मिल जायेगा परन्तु आत्मा अमर है फिर तुम क्या हो ?

774। तुम अपने आप को ईश्वर को अर्पित कर दो वही सबसे उत्तम सहारा है जो इस सहारे को जानता है वही भय शोक व चिन्ता से सर्वदा के लिये मुक्त हो जाता है।

775। जो कुछ तू करता है उसे ईश्वर को अर्पण करता चल ऐसा करने से तू सदा जीवन मुक्ति का अपने आप में अनुभव करेगा और उसी की कृपा से ही सदैव सुखी रहेगा ।

776। धार्मिक व सांस्कृतिक विकास से ही समाज के प्रति सच्ची निष्ठा उत्पन्न होती है जो हितकारी है ।

777। जो मनुष्य कष्ट व सब आपदाओं में भी निरंतर हृदय से प्रभु का सुमिरन करता रहता है उसके ऊपर प्रभु की कृपा तथा आशीर्वाद का विराट साया हरपल उसके साथ रहकर उसकी रक्षा करता है और उसके सब दुखों का निवारण करता है ।

778। विश्व में कोई भी ऐसा धर्म नहीं है जो मानव के हृदय को दैवी संपत्ति से सम्पन्न न करता हो तथा उसके हृदय की अशांति विकारों तथा दुखों को दूर न करता हो ।

779। परमार्थ के लिये हृदय व अंत: करण की शुद्धि नितांत आवश्यक है न कि भौतिक साधनों से शारीरिक शुद्धता ।

780। दैवी सम्पदा को प्राप्त पुरुष समाज का व अपना जीवन सफल बनाकर मुक्ति पाता है तथा आसुरी सम्पदा को प्राप्त पुरुष समाज का व अपना जीवन भी अशांत व क्लेशपूर्ण बनाकर अधोगति को प्राप्त करता है । ऐसे व्यक्ति का कभी उद्धार नहीं होता ।

अन्कण ऊषा अग्रवाल द्वारा